bseb 9th class hindi notes chapter 9 रूको बच्चो

रूको बच्चो

राजेश जोशी

कवि – परिचय

राजेश जोशी का जन्म सन् 1946 ई . में मध्यप्रदेश के नरसिंहगढ़ जिले में हुआ । उन्होंने शिक्षा पूरी करने के बाद पत्रकारिता शुरू की और कुछ सालों तक अध्यापन कार्य किया । राजेश जोशी ने कविताओं के अलावा कहानियां , नाटक , लेख और टिप्पणियाँ भी लिखीं । साथ ही उन्होंने कुछ नाट्य रूपांतर भी किए हैं । कुछ लघु फिल्मों के लिए पटकथा लेखन का कार्य भी किया । उन्होंने भर्तृहरि की कविताओं की अनुरचना ' भूमि का कल्पतरु यह भी ' एवं मायकोवस्की की कविता का अनुवाद ' पतलून पहिना बादल ' नाम से किया है । कई भारतीय भाषाओं के साथ – साथ अंग्रेजी , रूसी और जर्मन में भी राजेश जोशी की कविताओं के अनुवाद भी प्रकाशित हुए हैं ।
राजेश जोशी के प्रमुख काव्य संग्रह हैं – एक दिन बोलेंगे पेड़ , मिट्टी का चेहरा , नेपथ्य में हँसी और दो पंक्तियों के बीच ।
राजेश जोशी की कविताएँ गहरे सामाजिक अभिप्रायवाली होती हैं , वे जीवन के संकट में भी गहरी आस्था को उभारती हैं । उनकी कविताओं में स्थानीय बोली – बानी , मिजाज और मौसम सभी कुछ व्याप्त हैं । उनके काव्य लोक में आत्मीयता और लयात्मकता है तथा मनुष्य को बचाए रखने का एक निरंतर संघर्ष भी । दुनिया के नष्ट होने का खतरा राजेश जोशी को जितना प्रबल दिखाई देता है , उतना हो वे जीवन की संभावनाओं की खोज के लिए बेचैन दिखाई देते हैं ।

कविता का भावार्थ

' रुको बच्चो ' शीर्षक कविता प्रसिद्ध कवि राजेश जोशी की प्रतिनिधि रचना है । यह कविता साहित्य के सामाजिक सरोकार को व्याख्यायित करती है ।
कवि बच्चों से सड़क पार करने से पहले रूकने के लिए कहता है क्योंकि इस देश का शासक वर्ग जल्दी में है । किसी को कुचल देना उनके लिए कोई माएने नहीं रखता । तेजी से जाती अफसरों की गाड़ियों को गुजर जाने दो । वह जो तेजी से जाती हुई सफेद कार में बैठा अफसर गया । उसे कार्यालय पहुँचने की कोई जल्दी नहीं है । वह दोपहर या कभी – कभी इसके बाद अपने कार्यालय में पहुँचता है । काम करने में उसे और जल्दी नहीं रहती है । उसके टेबल पर रखी फाइल को देखने में उसे दिन , महीने और कभी – कभी वर्षों लग जाते हैं ।
कवि न्यायाधीश महोदय की कार को जाते हुए देखकर बच्चों को सड़क पार करने से रोकता है । वह कहता है कि न्यायाधीश से कोई नहीं पूछ सकता है कि तुम इतनी तेज कार से क्यों जा रहे हो । अनगिनत मुकदमें तुम्हारी अदालत में कई – कई सालों से लबित हैं । कहने को तो कहा जाता है कि देर से मिला न्याय नहीं है । परंतु ऐसी बात नारेबाजी या सेमिनारों में भाषण देने के लिए होते हैं । कई बार मुकदमें में दौड़ते – दौड़ते व्यक्ति मर जाता है और अदालत का फैसला नहीं हो पाता है ।
कवि फिर बच्चे को सड़क पार करने से रोकता है । इस बार वह पुलिस अफसर को देख कर ऐसा कहता है । वह कहता है कि पुलिस अफसर पैदल चले या कार से चले वह तेज चल कर लोगों के दिमाग में दहशत पैदा करता है । यह उसे प्रशिक्षण का हिस्सा है ।
कवि व्यग्य करते हुए कहता है कि जहाँ कोई वारदात होती है वहाँ सबसे बाद में पुलिस पहुँचती है ।

https://www.evidyarthi.in/

साइरन का बजना सुन कर कवि बच्चे से रूकने के लिए कहता है । वह कहता है कि किसी मंत्री की कार बहुत तेजी से आ रही होगी । उसे कहीं पहुँचने की जल्दी नहीं रहती । कवि उसकी हंसी उड़ीते हुए कहता है कि उसकी तोंद बहुत बड़ी है । इसके कारण उसे कुर्सी से उठने में कई मिनट लग जाते हैं । उसकी गाड़ी तो डर के मारे इतनी तेज दौड़ती है । इनकी सुरक्षा को अंधे रफ्तार की जरूरत है ।

अंत में कवि बच्चे को रुकने के लिए कहते हुए बताता है कि इन सबों को कहीं नहीं जाना है । इसीलिए इन्हें जल्दी जाना है ।

इस कविता में कवि ने शासन व्यवस्था के तीनों सांभों कार्यपालिका , न्यायपालिका और विधायिका पर प्रहार किया है । यहाँ के शासन व्यवस्था में बैठे लोगों की जल्दी कर्तव्य पालन के लिए नहीं है । बल्कि वे सबकुछ रौंद कर आगे निकलने के लिए है । यहाँ बच्चे भविष्य प्रतीक है । अपने भविष्य को अंधी रफ्तार से दबने – कुचलने से बचाने की जरूरत है ।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/